वेदों के बारे में सामान्य जिज्ञासुओं द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न

1. वेद क्या है ?

वेद शब्द संस्कृत भाषा के ''विद्'' धातु से बना है। इसका अर्थ है जानना , ज्ञान इत्यादि। वेद हिन्दू धर्म के प्राचीन पवित्र ग्रंथो का नाम है। वेदों को श्रुति भी कहा जाता है। क्योंकि माना जाता है कि इसके मंत्रो को परमेश्वर ब्रम्हा ने प्राचीन ऋषियों को अप्रत्यक्ष रूप से सुनाया था जब वे गहरी तपस्या में लीन थे। वेद भारतीय वाड.मय का प्राचीनतम ग्रंथ है, जो पीढी दर पीढी पिछले पांच हजार वर्षों से मुखदोगत् रूप से आज जक हमारे पास पहुंचा है । यह विश्व का सर्व प्रथम लिखित आध्यात्मिक ग्रंथ है। यह अमूल्य ग्रंथ भारत तो क्या विश्व की धरोहर है।

2. वेदों का महत्व व रक्षण क्यूं जरूरी है ?

अ) विश्व के वाड.मय का प्राचीनतम ग्रंथ

ब) केवल धार्मिक परन्तु एतिहासिक दृष्टी से वेदों का असाधारण महत्व है , भारतीयोंका आध्यात्मिक जीवन क्रम संस्कृति का यर्थाथ ज्ञान वैदिक वाड.मय जाने बिना मिलेगा नहीं। वेद आर्यो की संस्कृति और सभ्यता जानने का एक मात्र साधन

क) वेद ने अपनी मृत्युंजय परंपरा को अक्षुण्ण रक्खा अगर यह मरने योग्य होता तो कब का समाप्त हो गया होता, परंतु यह आज तक परंपरा से चला आ रहा है। यानि यह उस योग्यता का है प्रमाणित होता है। वेद सर्व कालिक सार्वभौमिक है।

ड) वेद के अध्ययन से भारतीयों की धर्म नीति जीवन दृष्टि का सम्यक् ज्ञान मिलता है , जो मानवता के लिए आवश्यक है।

इ) वेद ईश्वर की वाणी है , और स्वयं रक्षित है।

3. वेद जानना क्यूं जरूरी है ?

वेद मानव जीवन को सूखपूर्वक व्यतीत करने के लिये सबसे महत्वपूर्ण साधन है , संसार को किस लिये बनाया गया है इस बात की पूर्ण जानकारी ईश्वर ने हमे वेद के रूप में प्रदान की है। वेदों में व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रशासनिक व्यवस्था परस्पर संबंध आदि विषयों का विस्तृत ज्ञान है।

प्राचीन ऋषियो को तपस्या में मग्न रहते हुये वेद मंत्र सुनायी दिये इसलिए इन्हे श्रुति कहते है , तभी से सुनने की परंपरा से वेद परंपरा चली आ रही है। वस्तुत: वेद समस्त सत्य विद्याओं का ग्रंथ है यह किसी भी क्षेत्र , लोगों के लिये सीमित नहीं है। वेदों का यह ज्ञान सूर्य के प्रकाश के समान समस्त सृष्टी का पोषण एवं कल्याण के लिए है।

04. **वेदो का रक्षण इतने वर्षो तक कैसे हुआ ?**

वेद यह अति प्राचीन ग्रंथ है विश्व का पहला वाड:मय है , पर एसे प्राचीन

ग्रंथ का हजारों वर्षों से कैसे संरक्षण हुआ यह आश्चर्य है। व्यासजी ने वेद प्रवर्तन किये उनके शिष्योंने वेद ग्रहण किये व परंपरा आगे शुरू की।उनके सब शिष्य ज्ञान के उपासक थे , वेद का अध्ययन अध्यापन व संरक्षण उनके जीवन का ध्येय , व कार्य था। पीढीयों से भारत में यह कार्य चल रहा है वेद के किसी भी मंत्र व स्वर में भी फरक नहीं पडते हुये मूल स्वरूप में आज तक वे हमारे पास पहुंचे हैं। इन शिष्यों ने बिना किसी द्रव्य लाभ के परवाह न करते हुये वेद अध्ययन अध्यापन श्रध्दा से शतकानुशतक चालु रक्खा , इन मंत्रों के संरक्षण के साथ उससे संबधित विद्या व शास्त्र का रक्षण भी उन्होंने किया। एसे प्राचीन ऋचायें मंत्र व ग्रंथ प्रदीर्घ काल के लिये सुरक्षित कैसे रहे यह आश्चर्य है। परन्तु वैदिकों ने उत्तम संस्कारों के कारण यह कार्य स्मृतिद्वारा किया। स्मृति कैसे सुधारनी वेद पठन कैसे करना उसके नियम बांधे गये। लेखन कला आने के पहले धर्म ग्रंथ मुखोद्‌गत् करना इसके अलावा कोई मार्ग नहीं था। परन्तु इन वेदों का रक्षण करने वाले ब्राम्हण (खेडे) छोटे गांवो में रहकर लोगों से भिक्षा मांगकर अपना पेट भरते पाठशालाओं में रहकर पढाई करते। तीन चार हजार वर्ष पहले उनके पूर्वजों के समान उनको वेद मुखोदगत् हुये । उनके पास लेखन परंपरा शुरू होने के बाद से पोथी उपलब्ध हुयी, परन्तु पोथी से यह विद्या वे आज भी नहीं सीखते , हजारों वर्ष पहले उनके पूर्वजों ने जैसे गुरूमुख से सीखे , वैसे ही आज भी यह विद्या सीखी जाती है। मूल वेद में कोई बदल परिवर्तन न हो इसलिए प्राचीन ऋषियों ने अनेक युक्तियां नियोजित की। प्रर्तिशाख्य शिक्षा वगैरह ग्रंथ निर्माण किये। वेद मंत्र का एक भी स्वर (उच्चारण) गल्त हुआ तो अर्थ बदल जाता है। वेद का अध्ययन सस्वर ही होना चाहिये। इसलिए वेद में स्वर प्रक्रिया को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। स्वर का अर्थ नाद (Sound) विशिष्ट प्रकार के स्वर के साथ शब्द का उच्चारण करने से जो ध्वनि प्रकट होती है, उससे वह शब्द सिध्द होता है। इसलिये योग्य रीत से योग्य स्वर उच्चारण कर वेद मंत्र का पठन करने से वह मंत्र सिध्द होता है। इस मंत्र में प्रचंड शक्ति होती है , यह शक्ति टिकाने के लिये शुचिर्भूत रूप से मंत्र का लगातार पाठ करना पडता है। ये वेद सस्वर टिकाणे के लिये और एक युक्ति प्राचीन आर्यो ने बनायी । वेद विकृति तैयार की उसके लिये अलग अलग वेद शाखाओं में मंत्र रूप संहिताओं के पदपाठ तैयार किये इस पदपाठ के आधारपर क्रम , जटा , घन इ. विकृति तैयार की वेद मंत्र के पद उलटे सूलटे क्रम से बोलना व उसमें होने वाले स्वर का बदल ध्यान में रक्ख कर उच्चारण करना । इसलिए वेद विकृति का उपयोग हुआ। आज भी इसी रीत से वेद पठन गुरू शिष्य परंपरा से हो रहा है। यह विकृती मुखोद्‌गत करना व रखना अत्यंत कष्ट का काम है, यह एक तपस्या है।

05.**पू.गुरू स्वामी गंगेश्वरानंदजी का वेद रक्षण में क्या(Contribution)सहयोग था ?**

पू.गुरू स्वामी गंगेश्वरानंदजी उच्च कोटि के विद्वान संत थे, भौतिक चक्षु न होते हुये आप सही माने में प्रज्ञाचक्षु थे एक वेद कंठस्थ करने में पूरा जीवन लग जाता है परन्तु आपको चारों वेद कंठस्थ थे। वेदों की अलग पोथिंया उनको शाखाओंनुसार हो गयी थी, वहां मुद्रण दोष या अलग अलग मतों के

कारणों से वेदों की उन संहिताओं में फरक आने लगा था। सही कौन सा यह जानना नये अध्ययन करनेवालों के लिये मुश्किल होता जा रहा था। सनातन व हिंदु धर्म व प्राचीनतम ग्रंथ वेद शुद्ध रूप में मुद्रित कहीं भी उपलब्ध नही था , पू. स्वामीजीने आठ वैदिक विद्वानों को लेकर 'काशी' में विशेष प्रेस शुद्धस्याही , विशिष्ट कागज पर चारों वेदों का संकलन कर ''भगवान वेद'' की पुस्तक छपवाने का अनूठा कार्य किया। इस पुस्तक में सस्वर चिन्ह के साथ वेदों की चारों संहितायें छपी हैं, पुस्तक छापते समय विद्वानों के किसी शब्द या मंत्र के दो मत होने पर काम रोक दिया जाता जब तक उस शब्द या मंत्र का सही निर्णय नही होता काम आगे नहीं बढता इस तरह अनेक कठिनाइयों का सामने करते हुये यह अमूल्य ग्रंथ 'भगवान वेद' पू. स्वामीजी के देखरेख में छपा। इस ग्रंथ की 1100 प्रति छपी और पू.स्वामीजी ने इस पुस्तक की प्रतिष्ठा दुनिया के अनेक स्थानों पर , मंदिरों, विश्वविद्यालयों , मठों व मान्यवरों के घरों में करवायी। इसके अतिरिक्त वेदों पर भाष्य लिखे और इंग्रजी , हिंदी में वेद संबंधी पुस्तके जो सामान्य जन को समझ में आ सके व वेद पढने की जिज्ञासा जागृत कर सके छपवायी। वेद पाठशालायें खुलवायी जहां आज भी गुरू शिष्य परंपरा से वेद पठन सिखाया जाता है। वे वैदिक विद्वानों का आदर व सत्कार करते थे । उनके नाम से आज भी विद्वानों को पुरस्कृत व सन्मानित किया जाता है। वेदों के प्रचार के लिये आधुनिक भारत में आपका कार्य नेतृत्व योगदान अमूल्य है।

06. **वेदों का शास्त्रीय स्वरूप ?**

अ) वर्तमान काल में वेद चार माने जाते हैं , उनके नाम है

1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद तथा 4. अथर्ववेद द्वापर युग की समाप्ति के पहले वेदों के चार विभाग अलग अलग नहीं थे । द्वापर की समाप्ति के समय वेद पुरूष भगवान नारायण के अवतार श्रीकृष्ण द्वैपायन वेदव्यासजी ने यज्ञानुष्ठान के उपयोग को दृष्टिगत रखते हुये एक वेद के चार विभाग कर दिये और इन चारों विभागों की शिक्षा चार शिष्यों को दी। ये ही चार विभाग ऋग्वेद , यजुर्वेद , सामवेद, अथर्ववेद के नाम से प्रसिध्द है। पैल , वैशंम्पायन , जैमिनि और सुमन्त नामक इन चार शिष्यों ने शाकल आदि अलग अलग शिष्यों को पढाया। इन शिष्यों द्वारा अपने अपने आधीन वेदों के प्रचार व संरक्षण के कारण वे शाखाये अनके नाम से प्रसिध्द हुयी।

ब) वेदों का विभाजन

आधुनिक विचार धारा के अनुसार चार वेदों की शब्द राशि के विस्तार में तीन दृष्टियां पायी जाती है। अ) याज्ञिक ब) प्रायोगिग क)साहित्यिक

***याज्ञिक दृष्टी** – इस के अनुसार यज्ञों का अनुष्ठान ही वेद के शब्दों का मुख्य उपयोग माना गया है। सृष्टि के आरंभ से ही यज्ञ करने के लिये मंत्रोचारण की शैली का उपयोग रहा है। मंत्राक्षर व कर्म में विविधता रही , इसलिये वेदों की शाखाओं का विस्तार हुआ। ऋग्वेद की 21 शाखा , यजुर्वेद की 101 शाखा , सामवेद की 1000 शाखा और अथर्ववेद की 9 शाखा इस प्रकार कुल 1131 शाखायें है। इस संख्या

का उल्लेख महर्षि पतंजलिने अपने भाष्य में किया है। उपर्युक्र 1,131 शाखाओं में से वर्तमान में केवल 12 शाखायें ही मूल ग्रंथों में उपलब्ध है।
ऋग्वेद में केवल 2 शाखाओं के ग्रंथ प्राप्त है।
अ) शाकल ब) शांखायन
यजुर्वेद के कृष्ण यजुर्वेद में केवल 4 शाखाओं के ग्रंथ प्राप्त है
अ) तैत्तिरीय ब) मैत्रायणी क) कठ ड) कपिष्ठल
यजुर्वेद के शुक्ल यजुर्वेद में केवल 2 शाखाओं के ग्रंथ प्राप्त है
अ)माध्यंन्दिनीय ब) काण्व
सामवेद की केवल 2 शाखाओं के ग्रंथ प्राप्त है
अ) कौथुम ब) जैमिनी
अथर्ववेद की केवल 2 शाखाओं के ग्रंथ प्राप्त है
अ)शौनक ब) पिप्पलाद

उपर्यक्त 12 शाखाओं में से केवल 6 शाखाओं की अध्ययन शैली प्राप्त है। अन्य शाखाओं के कुछ ग्रंथ उपलब्ध है पर उससे उनका पूरा परिचय नहीं मिलता हैं।

***प्रायोगिक दृष्टी** – इसके अनुसार प्रत्येक शाखा के दो भाग हैं

1. मंत्र भाग – जो यज्ञ में साक्षात रूप से प्रयोग में आता है।
2. ब्राम्हण भाग – जिसमें आज्ञा बोधक शब्द , कथा , आख्यायिका एवं स्तुति द्वारा यज्ञ कराने की प्रवृति विकसित करना यज्ञानुष्ठान करने की पद्धति बताना , उसकी उत्पत्ति और विवेचन के साथ उसके रहस्य का निरूपण करना है।

***साहित्यिक दृष्टी** – इसके अनुसार प्रत्येक शाखा की वैदिक शब्द राशि का वर्गीकरण 4 भागों में किया है।

अ) संहिता मंत्र भाग
ब) ब्राम्हण ग्रंथ (गद्य में कर्मकाण्ड विवेचना)
क) आरण्यक (कर्मकाण्ड के पीछे के उद्‌देश की विवेचना)
ड) उपनिषद् (परमेश्वर , परमात्मा , ब्रम्हा , और आत्मा के स्वभाव और सबंध का बहुत ही दार्शनिक और ज्ञानपूर्वक वर्णन)

07. **चार वेदों में क्या है ?**

वेद के असल मंत्र भाग को संहिता कहते है।
ऋग्वेद – यह सबसे पहला वेद है। यह वेद मुख्यत: यज्ञमे देवतांओको आवाहन करनेवाले होता नाम के पुरोहित के लिये होता है। इसमें देवताओं के अवाहन करने के मंत्र है।
यजुर्वेद – इसमें यज्ञ की असल प्रक्रिया के लिये पद्यमन्त्रों के साथ गद्य मंत्र है।
सामवेद – इसमें यज्ञ में गाने के लिये संगीतमय मंत्र है।
अथर्ववेद – इसमें जादू चमत्कार , आरोग्य , यज्ञ के लिए मंत्र है।
इन चार वेदों के चार भाग – पहला भाग संहिता इसके अलावा हरेक भाष्य के तीन स्तर होते है। संहिता (मंत्रभाग)ब्राम्हण ग्रंथ (गद्य में कर्मकांड की विवेचना)

आरण्यक (कर्मकांड के पीछे उद्देश की विवेचना) उपनिषद (परमेश्वर , परमात्मा ब्रम्ह , और आत्मा के स्वभाव और संबंध का बहुत ही दार्शनिक और ज्ञानपूर्वक वर्णन)

वेद के अंग उपांग एवं उपवेद –

वेदों के सर्वांगीण अनुशीलन के लिये शिक्षा कल्प व्याकरण निरूक्त छंद और ज्योतिष इन 6 अंगो के ग्रंथ है। प्रतिपदसूत्र अनुपद , छन्दोभाषा (प्रतिशाख्य) धर्मशास्त्र , न्याय वैशेषिक , पूर्वमीमांसा , उत्तरमीमांसा , सांख्य व योग 6 उपांग ग्रंथ भी उपलब्ध है। आयुर्वेद , धनुर्वेद गांधर्ववेद तथा स्थापत्यवेद ये चारों वेदों के उपवेद कात्यायन ऋषिने बतायें है।

08. **कर्मकाण्ड उसका वर्गीकरण कैसे है ?**

वेदों का प्रधान लक्ष्य आध्यात्मिक ज्ञान देना है। अत: वेद में कर्मकाण्ड व ज्ञानकाण्ड दोनों विषयों का सर्वागीण निरूपण किया गया है। वेदों का प्रारम्भिक भाग कर्म काण्ड है और ज्ञानकाण्ड वाले भाग से अधिक है। जिन अधिकारी वैदिक विद्वानों को यज्ञ कराने का यजमान द्वारा अधिकार प्राप्त होता है उनको ऋत्विक कहते है। श्रौतयज्ञ में इन ऋत्विकों के चार गण है। होतृगण, अध्वर्युगण ,उद्गाातृगण तथा ब्रह्मगण इन चार गणों के लिये उपयोगी मंत्र संग्रह के अनुसार चार वेद हुये। ऋग्वेद में होतृगण के लिये उपयोगी मंत्रो का संकलन है। इसमें ऋक् संज्ञक (पद्यबध्द) मंत्रो के अन्तर्भाव के कारण इसे ऋग्वेद नाम दिया गया

यजुर्वेद में यज्ञ अनुष्ठान संबंधी अध्वर्युवर्ग के उपयोगी मंत्रो का संकलन है। इसमें गद्यात्मक मंत्रो की अधिकता के कारण इसका नाम यजुर्वेद पडा कुछ पद्य बध्द मंत्र भी है जो अध्वर्युवर्ग के उपयोगी है। यजुर्वेद के दो विभाग है शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद । सामवेद में यज्ञानुष्ठान के उद्गाता वर्ग के उपयोगी मंत्रो का संकलन है इसमें गायन पध्दति के लिये मंत्र है। अथर्ववेद में यज्ञनुष्ठान के ब्राह्मणवर्ग के उपयोगी मंत्रो का संकलन है। अथर्व का अर्थ है कमियों को हटाकर ठीक करना। इसलिए इसमें यज्ञ संबंधी सुधार या कमी पूर्ति करने वाले मंत्र है। इसमें पद्य व गद्य दोनों स्वरूपों के मंत्र है।

09. **क्या मैं वेद पढ सकता हुं ?**

वेद मंत्रो के तत्व को समझने के लिये हमे उपनिषद् आरण्यकों का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। क्योंकि उपनिषद् उनके भाष्य , कथा , प्रसंग एवं उदाहरणों को समझने के लिये निर्मित हुये है। स्वाध्याय के बिना वेदों की ऋचाओं को समझना कठिन हो जाता हैं। तप स्वाध्याय एवं जिज्ञासा के साथ वेद मंत्रो को पढना पढाना समझना और समझाना पडेगा।